IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नई शिक्षा नीति 2020 में विद्यालयी आकलन में 360 डिग्री की भूमिका

डॉ. प्रेरणा सेमवाल
पूर्व शोधार्थी
शिक्षा विभाग, बिड़ला परिसर,
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
(केंद्रीय) श्रीनगर –गढ़वाल ,उत्तराखण्ड

डॉ. नगनारायण उपाध्याय
अध्यापक
(बी.पी.एस.सी.)
सीनियर सेकंड्री स्कूल, मतेयाँ
गोपालगंज, बिहार

सार

प्रत्येक देश के लिए एक प्रभावशाली शिक्षा नीति की आवश्यकता होती है। जिससे वह देश के वर्तमान आवश्यकताओं के मांग के अनुसार शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन कर सकें। शिक्षा नीति से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति सम्बंधित होती है। विश्व के विभिन्न देश परंपरा, संस्कृति और आधुनिकता पर विचार करके शिक्षा प्रणालियों में सुधार करते है। जिसमें प्राथमिक शिक्षा के स्तर से लेकर उच्च शिक्षा के स्तर तक शिक्षा प्रणालियों में सुधार किया जाता हैं। पिछले वर्ष ही भारत सरकार ने अपनी नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा की है, जो कि डॉ कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर आधारित है। यह शोध आलेख नई शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास के लिए आकलन से सम्बंधित पहलुओं पर आधारित है। इस शोध आलेख का उद्देश्य नई शिक्षा नीति 2020 में आकलन के लिए 360 डिग्री के सम्प्रत्यय को पाठक तक पहुँचाना तथा इस के क्रियान्वयन पर शोधकर्त्ताओं द्वारा अपने विचार अभिव्यक्त करना है।

प्रमुख शब्दावली– नई शिक्षा नीति, आकलन, 360 डिग्री

परिचय

शिक्षा उन प्रमुख घटकों में से एक है, जो समाज में विकास और प्रगति का सूचक है। समाज में अधिक संख्या में शिक्षित लोग होंगे तो समाज में उनका योगदान अधिक सकारात्मक होगा। यह तथ्य समाज में शिक्षा के महत्व को बढ़ाता है और इसके परिणामस्वरूप ही सरकारें पहले से अधिक शिक्षा में निवेश करती है । शिक्षा वह उपकरण है जो लोगों को आवश्यक योग्यता, कौशल, तकनीक और ज्ञान प्रदान करता है और उन्हें अपने राष्ट्र और समाज के प्रति उनके अधिकारों और कर्तव्यों को समझने में सक्षम बनाता है। शिक्षा विश्व में एक सुव्यवस्था निर्धारित करने के लिए एक दृष्टिकोण का विस्तार करती है। यह व्यक्ति में अन्याय, हिंसा, भ्रष्टाचार और अन्य कारकों का पता लगाने की क्षमता को विकसित करती है। यह उन आवश्यक तत्वों में से एक है जो मानव को अन्य प्राणियों से अलग करती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत सरकार ने हमेशा ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में साक्षरता दर में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित किया है। भारत सरकार द्वारा भारत में प्राथमिक और उच्च शिक्षा में नामांकन और गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए कई कार्यक्रम चलाए हैं। सरकार द्वारा शिक्षा की पहली राष्ट्रीय नीति 1968 लागू की गई थी। दूसरी शिक्षा नीति 1986, जिसे बाद में 1992 में में सरकार द्वारा संशोधित किया गया था। सन 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा छब्म्ज् पाठ्यपुस्तकों के डिजाइन के लिए शुरू की गई थी। सन 2009 में, अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रुपरेखा को (छब्थ्ज्) निर्धारित किया गया। 29 जुलाई को 34 वर्षों के बाद, भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव लाने के उद्देश्य से एक नई नीति को मंजूरी दी। जिसे नई शिक्षा नीति के नाम से जाना जाता है।

नई शिक्षा नीति 2020

नई शिक्षा नीति में वर्तमान की 10+2 विद्यालय प्रणाली को 3 से 18 वर्ष के सभी विद्यार्थियों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण–शास्त्रीय आधार पर 5+3+3+4 की एक नयी व्यवस्था में पुनर्गठित करने की बात करती है। इस शैक्षणिक संरचना और पाठयक्रम ढाँचे के अंतर्गत फाउंडेशनल स्टेज (दो भागों में–आंगनवाड़ी / प्री–स्कूल के 3 साल + प्राथमिक स्कूल में कक्षा 1–2 में 2 साल, 3–8 वर्ष के बच्चों सहित), प्रीपरेटरी स्टेज (कक्षा 3–5, 8 से 11 वर्ष के बच्चों सहित), मिडिल स्कूल स्टेज (कक्षा 6–8, 11–14 उम्र के बच्चों सहित), और माध्यमिक चरण (दो चरणों में कक्षा 9–12, अर्थात, पहले 9 और 10 और दूसरे में 11 और 12, 14–18 वर्ष के बच्चों सहित) शामिल होंगें। शैक्षणिक संरचना और पाठयक्रम ढाँचे के अतिरिक्त फाउंडेशनल स्टेज से उच्च शिक्षा तक विद्यार्थियों के आकलन के बारे में कहा गया है। जिसमें मुख्यतरू नियमित रचनात्मक आकलन करना होगा द्य जिससे विद्यार्थियों की उच्च स्तरीय दक्षताओं की जाँच की जा सकें ।

प्रस्तावित राष्ट्रीय आकलन केंद्र, एनसीईआरटी और एससीईआरटी के मार्गदर्शन में राज्यों / केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा प्रगति कार्ड को पूरी तरह से नया रूप दिया जाएगा। यह प्रगति कार्ड एक समग्र, 360–डिग्री, बहुआयामी कार्ड होगा। जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक पक्ष (साइकोमोटर) डोमेन में विकास का बारीकी से किए गये विश्लेषण का विस्तृत विवरण, शिक्षार्थी की विशिष्टता सहित दिया जाएगा।

360 डिग्री क्या है?

रचनात्मक आकलन का लक्ष्य छात्र के अध्ययन का निरीक्षण करना और प्रतिक्रिया प्रदान करना है, जिससे छात्र का समग्र विकास हो सकें। रचनात्मक आकलन की रणनीतियों में 360–डिग्री प्रतिपुष्टि को भी सम्मिलित किया गया है। 360–डिग्री मूल्यांकन एक बेहतर दृष्टिकोण है जो विद्यार्थी के विकास का प्रत्येक डिग्री से आकलन करता है तथा इसके समर्थन के लिए तीनों आकलन रणनीतियां– शिक्षक आकलन, सहपाठी आकलन और स्व–आकलन को अपने में शामिल करता हैं। 360 डिग्री फीडबैक एक बहु–इनपुट दृष्टिकोण है जो छात्रों के लिए सीखने के परिणामों में सुधार कर सकता है और शिक्षकों और छात्रों दोनों की उपलब्धि को बढ़ावा दे सकता है। 360–डिग्री एक विधि और एक आकलन उपकरण है जो प्रत्येक विद्यार्थी को अपने अध्यापक और चार से आठ साथियों, और सहपाठियों द्वारा प्रदर्शन की प्रतिपुष्टि प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। अधिकांश 360–डिग्री प्रतिक्रिया उपकरण में प्रत्येक व्यक्ति और विद्यार्थी द्वारा स्व–मूल्यांकन का भी जवाब देना होता है। 360–डिग्री प्रतिक्रिया प्रत्येक विद्यार्थी को यह समझने की अनुमति देती है कि साथियों का समूह, अध्यापक तथा विद्यालय के सदस्यों के रूप में उसके प्रदर्शन की प्रभावशीलता को अन्य द्वारा कैसे आंका गया है? 360–डिग्री फीडबैक प्रक्रियाएं सबसे प्रभावी प्रतिक्रिया प्रदान करती है द्य जो उन व्यवहारों पर आधारित होती है जिन्हें विद्यालय के अध्यापकों और सहपाठियों द्वारा अवलोकन किया जाता है।

आकलन में 360 डिग्री का उद्देश्य

360–डिग्री फीडबैक का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को उनकी शक्ति/ताकत और कमजोरियों को समझने में मदद करना है ताकि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास और शिक्षा के उद्देश्यों को व्यवहारिक रूप से प्राप्त किया सकें ।

360 डिग्री आकलन के लाभ

□ बहु–आयामी प्रतिपुष्टि

यह विधि विद्यार्थी के प्रगति के बारे में विद्यार्थी के साथियों, अध्यापकों और उसके स्वयं के आकलन प्रतिक्रिया प्रदान करती है और सिर्फ एक व्यक्ति से प्राप्त प्रतिक्रिया पर एक निश्चित सुधार हो सकता है। 360 डिग्री फीडबैक से प्रबंधकों का समय भी बच सकता है क्योंकि वे फीडबैक प्रदान करने में कम ऊर्जा खर्च कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त साथियों की धारणा महत्वपूर्ण होती है और यह प्रक्रिया विद्यार्थियों और अभिभावक को यह समझने में मदद करती है कि अन्य अध्यापक और साथी उनके कार्य का किस प्रकार अवलोकन करते है।

□ समूह/ टीम विकास

यह प्रतिक्रिया टीम के सदस्यों को एक साथ अधिक प्रभावी ढंग से काम करने एवं सीखने में मदद करता है। (टीम के सदस्य कैसा प्रदर्शन कर रहे हैं, इसके बारे में अधिक जानते है।) मल्टी–रेटर फीडबैक टीम के सदस्यों को एक दूसरे के प्रति अधिक जवाबदेह बनाता है क्योंकि वे ज्ञान साझा करते हैं कि वे प्रत्येक सदस्यों के प्रदर्शन पर इनपुट प्रदान करेंगे। यह एक अच्छी तरह से नियोजित प्रक्रिया है जो समूह में संचार और टीम विकास में सुधार कर सकती है।

☐ व्यक्तिगत और संस्था का विकास

360–डिग्री प्रतिक्रिया से संस्था (विद्यालय/महाविद्यालय) में व्यक्तिगत और संगठनात्मक विकास की जरूरतों को समझने के लिए यह सबसे अच्छे तरीकों में से एक है। इसके माध्यम से आप जान सकते है कि प्रत्येक विद्यार्थियों को एक साथ काम करने से किन कौशलों और योग्यताओं का विकास हुआ है। इसके साथ ही आपके संगठन की नीतियां, प्रक्रियाएं और दृष्टिकोण विद्यार्थियों की सफलता को कैसे प्रभावित करते है। 360–डिग्री फीडबैक का उपयोग करने वाले कई संगठनों का लक्ष्य शक्ति/ताकत की पहचान करने के लिए किया जाता है। ताकि विद्यार्थियों का समग्र विकास हो सके ।

☐ संस्था (विद्यालय/महाविद्यालय) का उतरदायित्व और जवाबदेही

विद्यालय एक ऐसा वातावरण प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है। जिसमें विद्यार्थियों को उनकी वृद्धि और विकास की जरूरतों में प्रोत्साहन और समर्थन प्रदान किया जाता हो। मल्टी–रेटर फीडबैक किसी भी विद्यार्थी को अपनी योग्यताओं और कौशलों को बढ़ाने के लिए उसके या उसके बारे में उत्कृष्ट जानकारी प्रदान कर सकता है। इसके अतिरिक्त 360–डिग्री फीडबैक अधिक सटीक है, उनके प्रदर्शन का अधिक चिंतनशील है और अकेले शिक्षक की प्रतिक्रिया की तुलना में अधिक मान्य है। यह शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास दोनों के लिए सूचना को अधिक उपयोगी बनाता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा के उद्देश्यों का व्यवहारिक रूप से पूर्ण न होने पर संस्था (विद्यालय/महाविद्यालय) के उतरदायित्व और जवाबदेही पर प्रश्नचिहन लगा सकता है।

☐ भेदभाव का अंत

360 डिग्री फीडबैक से विद्यार्थियों के विभिन्न कार्यों में कई व्यक्तियों से प्रतिक्रिया मिलती है, तो नस्ल, आयु, लिंग, जाति इत्यादि भेदभाव की संभावना कम हो जाती है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने उपलब्धि की गुणवत्ता के बारे में बहुविध प्रतिक्रिया प्राप्त करता है, विशेष रूप से इन प्रतिक्रियाओं की प्रक्रियाओं में आंतरिक (स्वयं) या बाहरी (अध्यापक और साथियों) को शामिल किया जाता है। इस प्रतिक्रियाओं की सहायता से विद्याथियों के सभी पहलुओं में गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है।

☐ प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आकलन

360–डिग्री प्रतिक्रिया के माध्यम से विद्यार्थियों और विद्यालय में प्रशिक्षण की जरूरतों के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करती है और इस प्रकार विशेष प्रकार की कक्षाओं, निर्देशन और परामर्श, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण और कार्यशाला की योजना बनाने की अनुमति प्रदान कर सकता है।

☐ प्रमाण (रिकॉर्ड) का संचय

360 डिग्री के माध्यम से एक साथ सभी विद्यार्थियों से सम्बंधित विभिन्न फीडबैक प्राप्त होते है और आकड़ों का एक ही स्थान पर संचय हो जाता हैद्य जिससे प्रत्येक विद्यार्थी के आकलन करने में विद्यालय/महाविद्यालय को सुविधा मिलती है ।

☐ निर्देशन में सहायक

इस आकलन विधि के माध्यम से विद्यार्थियों की शक्ति/ताकत, कमजोरियों और पिछड़ेपन के कारण के अतिरिक्त उसकी रूचि और अभिरुचि की भी जानकारी मिलती है जिससे आसानी से विद्यार्थियों की रूचि, अभिरुचि, शक्ति/ताकत और कमजोरियों के लिए निर्देश(कपतमबजपवद) प्रदान किए जा सकते है ।

अब हम सभी के सम्मुख कुछ प्रश्नों का उद्भव होता है कि–

1. 360 डिग्री का विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा प्रशिक्षण संस्थानों में किस प्रकार क्रियान्वयन किया जा सकता है ?
2. 360 डिग्री को कब ,कहाँ, कैसे, कितनी बार प्रयोग में लाया जाये ?
3. प्राप्त प्रतिपुष्टि (फीडबैक) प्रारूप का विश्लेषण (मात्रात्मक और गुणात्मक) कैसे किया जाएगा?
4. 360 डिग्री प्रतिपुष्टि (फीडबैक) को प्रगति कार्ड में कैसे सम्मिलित किया जाएगा?
5. 360 डिग्री अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (बी.एड और एम.एड) के प्रशिक्षुओं पर किस प्रकार क्रियान्वयन और प्रशिक्षुओं का कैसे आकलन किया जाएगा ?
6. बी.एड और एम.एड के पाठ्यचर्या में 360 डिग्री को कैसे सम्मिलित किया जाये?
7. बी.एड और एम.एड के प्रशिक्षुओं द्वारा 360 डिग्री के सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहारिक रूप से कक्षा में कैसे उपयोग में लाया जाएगा?

इन सब प्रश्नों के उत्तर में कुछ सुझाव के रूप में हम कह सकते है कि

राष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट समूह का गठन किया जाये जो आकलन प्रक्रिया के अतिरिक्त निम्नलिखित पहलुओं पर योजना कर निर्णय ले सके –

1. प्रशिक्षण के लिए मैन्युअल का निर्माण करना ।
2. पूर्वदृप्राथमिक स्तर के अध्यापकों से उच्च शिक्षा के अध्यापकों तक प्रशिक्षण/कार्यशाला की योजना का निर्धारण ।
3. पूर्व–सेवाकालीन और सेवाकालीन शिक्षकों को 360 डिग्री प्रशिक्षण प्रदान करना।
4. प्रारूप का निर्माण– सबसे पहले 360 डिग्री प्रतिपुष्टि के लिए एक मानकीकृत प्रारूप का निर्माण करना होगाद्य जिसमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक और क्रियात्मक पक्ष (साइकोमोटर डोमेन) के विकास और समग्र विकास को ध्यान में रखा जाना चाहिए । (अध्यापक द्वारा मूल्यांकन प्रारूप , सहपाठी मूल्यांकन प्रारूप और स्व–मूल्यांकन प्रारूप) द्य
5. समय का निर्धारण– 360 डिग्री प्रतिपुष्टि का सेमेस्टर में कितनी बार आयोजन किया जाएगा? किन–किन गतिविधियों (शैक्षणिक और पाठ्य–सहगामी) के लिए उपयोग में लाया जाएगा ।
6. प्रारूप के उपयोग हेतु दिशा निर्देश का निर्धारण ।
7. प्राप्त प्रतिपुष्टि (फीडबैक) का विश्लेषण करने की प्रक्रिया का निर्धारण ।
8. ऑनलाइन और वर्चुअल कक्षा–कक्ष में आकलन हेतु दिशा निर्देश ।

360 डिग्री क्रियान्वयन में चुनौतियां

1. अध्यापक, विद्यार्थी और अभिभावक इत्यादि को 360 डिग्री के प्रति जानकारी और जागरूकता ।
2. पूर्व–सेवाकालीन और सेवाकालीन शिक्षकों को विभिन्न कार्य करने के लिए प्रशिक्षण और कार्यशाला का आयोजन करना ।
3. स्पष्ट दिशा–निर्देश निर्धारित करना ।
4. प्राप्त प्रतिपुष्टि (फीडबैक) का विश्लेषण करने की प्रक्रिया का निर्धारण ।
5. अतिरिक्त कार्यभार ।
6. उचित सूचना प्राप्ति में संदेह ।
7. बी.एड और एम.एड के प्रशिक्षुओं को 360 डिग्री विधि से कैसे आकलन किया जाएगा ?
8. फीडबैक कब, कैसे और कहाँ दिया जाये ?
9. प्रशिक्षण के लिए मैन्युअल का निर्माण करना ।

निष्कर्ष

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा में गुणवत्ता और सामर्थ्य में सुधार लाने के लिए नीतियां बनाकर और साक्षरता दर में वृद्धि के साथ–साथ गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए सख्त नियंत्रण के साथ अपने उद्देश्य को प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। यह शिक्षा नीति शैक्षणिक संरचना और पाठयक्रम ढाँचे में परिवर्तन करने के अतिरिक्त विद्यार्थियों का व्यापक रूप से आकलन में भी अग्रसर है। इस नीति के अंतर्गत विद्यार्थियों के आकलन के लिए यह प्रावधान किया गया है कि प्रस्तावित राष्ट्रीय आकलन केंद्र, एनसीईआरटी और एससीईआरटी के मार्गदर्शन में राज्यों / केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा प्रगति कार्ड को पूरी तरह से नया रूप दिया जाएगा। यह प्रगति कार्ड एक समग्र, 360–डिग्री, बहुआयामी कार्ड होगा

जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावात्मक और साइकोमोटर डोमेन में विकास का बारीकी से किए गये विश्लेषण का विस्तृत विवरण, शिक्षार्थी की विशिष्टता सहित दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त छात्रों द्वारा कृत्रिम बुद्धि आधारित सॉफ़्टवेयर का विकास और उपयोग अपने विकास को ट्रैक करने के लिए किया जा सकता है। जिससे छात्रों को उनकी शक्ति/ताकत, रुचि के क्षेत्रों के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान हो सकती है।

आकलन में 360–डिग्री फीडबैक का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को उनकी शक्ति/ताकत और कमजोरियों को समझने में मदद करना है ताकि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास और शिक्षा के उद्देश्यों की व्यवहारिक रूप से प्राप्ति की जा सके। 360 डिग्री का क्रियान्वयन करने के लिए प्रारूप का निर्माण करना होगाद्य अध्यापक द्वारा मूल्यांकन, सहपाठी मूल्यांकन और स्व–मूल्यांकन से सम्बंधित होगें और जिसमें स्पष्ट दिशा–निर्देश दिए गये होंगे । इसके क्रियान्वयन में धरातल स्तर पर अनेक चुनौतियां जैसे–अध्यापक, विद्यार्थी और अभिभावक इत्यादि को 360 डिग्री के प्रति जानकारी और जागरूकता, शिक्षकों को विभिन्न कार्य करने के लिए प्रशिक्षण और कार्यशाला, प्राप्त फीडबैक का विश्लेषण ,अतिरिक्त कार्यभार और उचित सूचना इत्यादि चुनौतियां का सामना किया जा सकता हैं । अंत में आकलन से सम्बंधित प्रश्नों और चुनौतियां के समाधान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट समूह का गठन किया जाये जो आकलन प्रक्रिया के अतिरिक्त इससे सम्बंधित विभिन्न पहलुओं पर योजना कर निर्णय ले सके ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Aithal, P. S., & Aithal, S. (2020). Analysis of the Indian National Education Policy 2020 towards Achieving its Objectives. *International Journal of Management, Technology, and Social Sciences*, 19–41. https://doi.org/10.47992/ijmts.2581.6012.0102
2. Development, R. (2020). National Education Policy 2020. *Economic and Political Weekly*, *55*(31), 4L.
3. Poovarasan, G., Susikumar, S., Naveen, S., & ... (2020). International Journal of Engineering Technology Research & Management. *Academia.Edu*, *03*, 131–134. http://www.academia.edu/download/62142316/Jan-2020-17-1579239734-820200219-79933-ihqi97.pdf
4. एम.एच.आर.डी. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली